ॐ श्री गणेशाय नमः

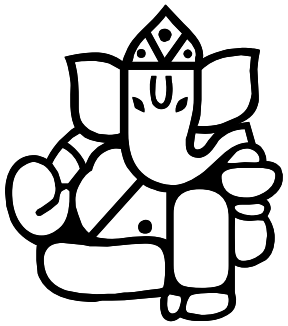

Horoscope of **Sample**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

~~~~~~

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

~~~~~~

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्दि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

Astro-Vision
YOUR TOMORROW

नाम : Sample [स्त्री]

सप्ताह के दिन में। : सोमवार

सोमवार में जन्म लेने से आप मधुर भाषि और रोचक होगें । आप ऐसे हालतों में शांन्त रहना चाहते है जहाँ बाकी लोग क्रोधित हो । मन में व्यक्त इरादे होगों ।

जन्म नक्षत्र : शताभिषा

जन्मनक्षत्र शतभिषा है। आपके आश्रय में आए हुए व्यक्ति निराश नहीं होंगे। आप उदार दिल की महिला हैं। आप व्यवहार में सरल और निर्मल हैं इस कारण कोई भी आपकी ओर उँगली नहीं उठा पायेगा। आप रचनात्मक कार्यों में अति अभिरुचि रखनेवाली नारी हैं।

अपने व्यक्तिगत जीवन के रहस्यों से दूसरे लोगों को परिचित करना आप पसंद नहीं करती। कोई सूक्ष्मदृष्टि से आपके जीवन का अवलोकन करेगा तो ज़रूर पता चलेगा कि आपके जीवन में कुछ कमी है। यह होते हुए भी कमी के कारण को जान नहीं पायेंगे।

कभी कभी स्वभाव से चंचलता प्रकट हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों को नीतिबोध के साथ निर्वाह करने में निपुण हैं। परिवार के अन्य लोगों से अपेक्षा रखना निराशा का कारण बन सकता है। अपने विचार और धारणा को बदलना कठिन बात है। आपके विवाह के बाद आपके पति को बड़ा लाभ होगा।

आचरण से आप निष्ठावान महिला हैं। स्वभाव से आप गर्म मिज़ाज की हैं। इस कारण परिवार के बीच कलुषित वातावरण पैदा होने की संभावनायें दिखाई देती हैं। किसी कारण पर कुछ दिन पति से दूर रहने का अवसर आ सकता है। वैचारिक मतभेद और पारिवारिक क्लेश बड़ा रूप न ले सकें, इस बात का विशेष ध्यान रखें। आपकी वाणी की मधुरता स्थिति को संभाल पाने में सहायक होगा।

वायु संबन्धी विकारों से बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। मूत्राशय के अन्य रोगों से बचते रहना भी आवश्यक है। रोग के चिन्ह दिखाई देते ही डाक्टरी जांच करवाना और उनकी सलाह को ध्यान में रखना लाभदायी होगा।

तिथि : दसमि

दशमी तिथि में जन्म होने से आप की विशाल मानसिकता प्रशंसनीय होगी। बहुत छोटी आयु से इस कला को हस्तगत करने में बड़ी कीर्ति प्राप्त होगी। आप शान्त भाव धारण करने वाले हैं। आप गंभीर मुखभाव धारण करने वाले हैं। आप अपनी संपन्नता दूसरों को दिखाने में रुचि नहीं रखते। आप स्वगृह और स्वसमुदाय के बीच स्नेह संपन्नता प्राप्त करेंगे। आप आमोद प्रमोद के बड़े पुजारी हैं। आप उदार हृदय, अत्यन्त नम्र व्यवहार वाले और कामी होंगे।

करण : विशथी

क्योंकि आपने बद्र (विशठि) करना में जन्म लिया है आप बहुत शान्तिशील होगों । जीवन के प्रति आपके शक्त रीतियाँ दूसरों के आँखें में आपको हृदयहीन बनाएगों । आप हमेशा उत्तरदयित्वो को अपनाने में खुश रहते है ।

नित्ययोग : ब्रह्मा

आपका जन्म ब्रह्म नित्ययोग में हुआ है। स्वभावतः आप आत्मज्ञान, विज्ञान तथा ज्ञान के धनी होंगे। आत्मनिष्ठा और ईश्वर विश्वास आपके

नैसर्गिक गुण हैं। आप सब तरह के लौकिक सुख पसन्द करते तो हैं पर आवश्यकता पड़ने पर आप सब कुछ न्यौधावर करने की तैयारी भी रखते हैं। इसलिए आप दूसरों का आदर प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान और धन दोनों के समान रूप के अधिकारी हैं। आपका जीवन विद्या से जुड़ा रहेगा। एक साथ अनेक विषयों में पारंगता प्राप्त होगी।

नाम	: Sample
लिंग	: स्त्री
जन्म तिथि	: 27 अप्रेल, 1992 सोमवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 10:50:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: New Delhi
रेखांश & अक्षांश (Deg.Mins)	: 77.13 पूरब , 28.38 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष = 23 डिग्रि. 45 मिनिट. 15 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **शताभिषा** - 1
जन्म राशी - राशी का देव	: **कुंम्भ** - शनि
लग्न - लग्न का देव	: मिथुन - बुध
तिथि	: दसमि, कृष्णपक्ष

नक्षत्र का देव	: राहु
गणम्, योनी, जानवर	: असुर, स्त्री, धोड़
पक्षी, पेड	: मोर, कडंम्ब वृक्ष
चन्द्र अवस्था	: 2 / 12
चन्द्र वेला	: 6 / 36
चन्द्र क्रिया	: 10 / 60
ठगड़ा राशी	: सिंह,वृशचिक
करण	: विशथी
नित्ययोग	: ब्रह्मा
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: मेष - भरणी
अनगदित्य का स्था	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Taurus

सूर्योदय	: 05:44 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:54 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 13.10
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 32.55
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 21 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: सोमवार
कलिदिना	: 1860274
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - वृषभ

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	113:12:35	गुरु	154:39:6 रितु
चन्द्र	332:29:59	शनि	317:41:43
रवि	37:12:3	युरेनस	288:0:15 रितु
बुध	10:21:27	नेप्टयून	288:56:43 रितु
शुक्र	24:32:40	प्लूटो	231:58:49 रितु
मंगल	353:19:26	नोड	273:35:56

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष = 23डिग्रि.45 मिनिट.14 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	89:27:21	मिथुन	29:27:21	पुर्नवासु	3
चन्द्र	308:44:45	कुंम्भ	8:44:45	शताभिषा	1
रवि	13:26:48	मेष	13:26:48	भरणी	1
बुध	346:36:12	मीन	16:36:12	उत्तर भद्रपाढा	4
शुक्र	0:47:25	मेष	0:47:25	अशविनि	1
मंगल	329:34:12	कुंम्भ	29:34:12	पूर्व भद्रपाढा	3
गुरु	130:53:51	सिंह	10:53:51रितु	मघा	4
शनि	293:56:28	मकर	23:56:28	धनिष्ठ	1
राहु	249:50:41	धनु	9:50:41	मूल	3
केतु	69:50:41	मिथुन	9:50:41	आर्द्र	1
गुलिक	148:29:33	सिंह	28:29:33	उत्तर फालगुनी	1

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	पुर्नवासु	गुरु	चन्द्र	चन्द्र
चन्द्र	शताभिषा	राहु	गुरु	गुरु
रवि	भरणी	शुक्र	शुक्र	शुक्र
बुध	उत्तर भद्रपाढा	शनि	गुरु	राहु
शुक्र	अशविनि	केतु	शुक्र	शुक्र
मंगल	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	चन्द्र	मंगल
गुरु	मघा	केतु	शनि	राहु
शनि	धनिष्ठ	मंगल	मंगल	शुक्र
राहु	मूल	केतु	शनि	बुध
केतु	आर्द्र	राहु	गुरु	रवि
गुलिक	उत्तर फालगुनी	रवि	मंगल	राहु

राशी

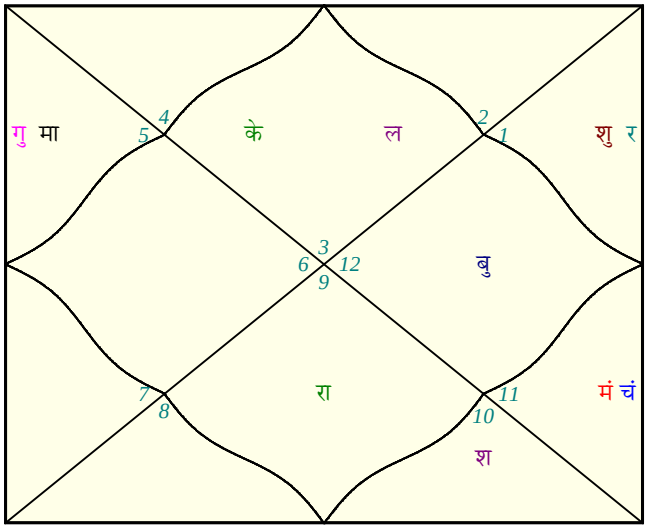

नवांश

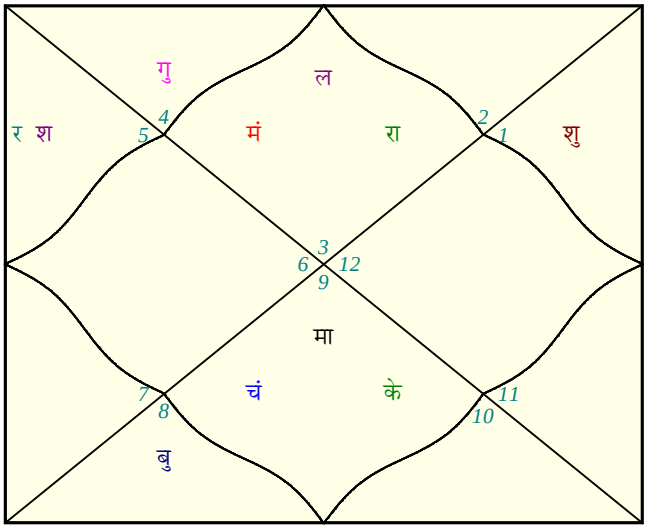

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 15 साल, 2 महीने, 9 दिन

भाव कुंडली

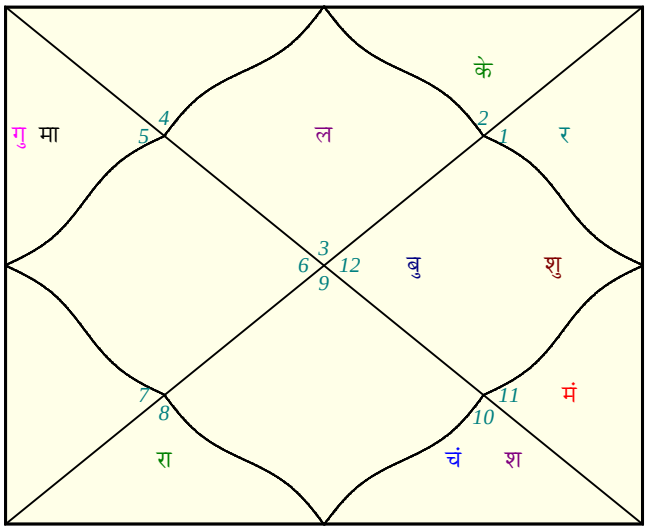

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	72:52:51	89:27:21	102:52:51	
2	102:52:51	116:18:21	129:43:51	
3	129:43:51	143:9:21	156:34:51	गु,मा
4	156:34:51	170:0:22	186:34:51	
5	186:34:51	203:9:21	219:43:51	
6	219:43:51	236:18:21	252:52:51	रा
7	252:52:51	269:27:21	282:52:51	
8	282:52:51	296:18:21	309:43:51	चं,श
9	309:43:51	323:9:21	336:34:51	मं
10	336:34:51	350:0:22	6:34:51	बु,शु
11	6:34:51	23:9:21	39:43:51	र
12	39:43:51	56:18:21	72:52:51	के

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	बु	=श	+मं	=गु	=मं	=श	+र	^श	~गु	~बु	र
औरा	चं	+र	^र	+र	~र	+चं	+र	~र	~र	+र	चं
द्रिख्खन	श	=श	^र	~चं	=मं	=शु	^गु	+बु	~गु	~बु	मं
चतूर्थांश	गु	=शु	+चं	^बु	=मं	^मं	+मं	+शु	~गु	~बु	शु
सप्तांश	गु	=मं	+चं	=गु	=मं	+र	~शु	=गु	+श	+र	श
नवांश	बु	=गु	^र	=मं	=मं	~बु	+चं	~र	+बु	+गु	गु
दशांश	गु	=मं	^र	=मं	=मं	^मं	+मं	~मं	~गु	~बु	शु
व्दादशांश	शु	=शु	=बु	^बु	=मं	=श	^गु	+शु	~गु	~बु	चं
सोडांश	गु	=गु	+मं	+र	=मं	^मं	=श	~मं	+शु	=शु	मं
विंशाम्स	गु	=शु	+गु	~चं	=मं	+चं	+चं	~चं	+श	~श	बु
चतुर्विंशाम्स	चं	=श	=बु	+र	~र	+चं	+मं	^श	~गु	+गु	बु
भम्श	गु	=शु	+मं	=गु	=मं	+गु	=श	~मं	~गु	~बु	शु
त्रिंमशांश	शु	=श	+गु	=गु	=मं	=शु	^गु	^श	+श	~श	शु
खवेदांश	चं	=गु	=बु	+र	^शु	+चं	~बु	+शु	+शु	=शु	शु
	र	+बु	+गु	=गु	^शु	^मं	^गु	=गु	+श	~श	श
शष्टियांश	मं	^चं	=बु	=गु	^शु	=श	~शु	=गु	=चं	~श	मं

^ अपना वर्ग + क़्द्धत्ड्डदड्डथ्क्र = निश्पक्षीय ~ शत्रु

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	3	5	3	6	3	3	4	27
वृषभ	3	4	4	5	3	5	2	26
मिथुन	6	1	3	5	3	6	4	28
कर्क	5	4	6	4	4	3	4	30
सिंह	4	4	5	4	5	5	2	29
कन्या	2	4	5	3	4	4	2	24
तुला	4	4	2	4	1	4	2	21
वृशचिक	6	6	6	4	4	5	5	36
धनु	4	5	5	4	2	7	4	31
मकर	3	4	4	5	4	3	4	27
कुंम्भ	4	4	5	4	3	5	3	28
मीन	5	3	6	4	3	6	3	30
	49	48	54	52	39	56	39	337

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

प्ड्डह्मण्फ दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD)

गुरु > 15:02:10 शनि > 31:02:10 बुध > 50:02:10

केतु > 67:02:10 शुक्र > 74:02:10 रवि > 94:02:10

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 15 साल, 2 महीने, 9 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
राहू	गुरु	27-04-1992	13-08-1994
राहू	शनि	13-08-1994	18-06-1997
राहू	बुध	18-06-1997	06-01-2000
राहू	केतू	06-01-2000	23-01-2001
राहू	शुक्र	23-01-2001	24-01-2004
राहू	सूर्य	24-01-2004	18-12-2004
राहू	चन्द्र	18-12-2004	19-06-2006
राहू	कुज	19-06-2006	07-07-2007
गुरु	गुरु	07-07-2007	24-08-2009
गुरु	शनि	24-08-2009	07-03-2012
गुरु	बुध	07-03-2012	13-06-2014
गुरु	केतू	13-06-2014	20-05-2015
गुरु	शुक्र	20-05-2015	18-01-2018
गुरु	सूर्य	18-01-2018	06-11-2018
गुरु	चन्द्र	06-11-2018	07-03-2020
गुरु	कुज	07-03-2020	11-02-2021
गुरु	राहू	11-02-2021	07-07-2023
शनि	शनि	07-07-2023	10-07-2026
शनि	बुध	10-07-2026	19-03-2029
शनि	केतू	19-03-2029	28-04-2030
शनि	शुक्र	28-04-2030	28-06-2033
शनि	सूर्य	28-06-2033	10-06-2034
शनि	चन्द्र	10-06-2034	09-01-2036
शनि	कुज	09-01-2036	17-02-2037
शनि	राहू	17-02-2037	25-12-2039
शनि	गुरु	25-12-2039	07-07-2042
बुध	बुध	07-07-2042	03-12-2044
बुध	केतू	03-12-2044	30-11-2045
बुध	शुक्र	30-11-2045	30-09-2048
बुध	सूर्य	30-09-2048	06-08-2049
बुध	चन्द्र	06-08-2049	06-01-2051
बुध	कुज	06-01-2051	03-01-2052
बुध	राहू	03-01-2052	22-07-2054
बुध	गुरु	22-07-2054	27-10-2056

बुध	शनि	27-10-2056	07-07-2059
केतू	केतू	07-07-2059	03-12-2059
केतू	शुक्र	03-12-2059	02-02-2061
केतू	सूर्य	02-02-2061	09-06-2061
केतू	चन्द्र	09-06-2061	08-01-2062
केतू	कुज	08-01-2062	07-06-2062
केतू	राहू	07-06-2062	25-06-2063
केतू	गुरु	25-06-2063	31-05-2064
केतू	शनि	31-05-2064	10-07-2065
केतू	बुध	10-07-2065	07-07-2066
शुक्र	शुक्र	07-07-2066	06-11-2069
शुक्र	सूर्य	06-11-2069	06-11-2070
शुक्र	चन्द्र	06-11-2070	07-07-2072
शुक्र	कुज	07-07-2072	06-09-2073
शुक्र	राहू	06-09-2073	05-09-2076
शुक्र	गुरु	05-09-2076	07-05-2079
शुक्र	शनि	07-05-2079	07-07-2082
शुक्र	बुध	07-07-2082	07-05-2085
शुक्र	केतू	07-05-2085	07-07-2086
सूर्य	सूर्य	07-07-2086	25-10-2086
सूर्य	चन्द्र	25-10-2086	25-04-2087
सूर्य	कुज	25-04-2087	31-08-2087

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

गृहों के स्थिती का संशोधन

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: बुध
दूसरा	,,	(पनप्र)	: चन्द्र
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: रवि
चौथा	,,	(केन्द्र)	: बुध
पंचम	,,	(त्रीकोण)	: शुक्र
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: मंगल
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: गुरु
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: शनि
नवमा	,,	(त्रीकोण)	: शनि
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: गुरु
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: मंगल
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: शुक्र

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में नवमा स्थानपर रहा है।

लग्न स्थान के हिसाब से यह जन्मकुंडली कुज दोष या मंगलदोष से मुक्त है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

यह जन्मकुंडली मंगल दोष से मुक्त है।

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी गृह मौढ्य स्थिती में नही है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।

अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र	श्रेष्ट समय				युवावस्था
बु	क्षीण परिस्थिती				युवावस्था
शु					बालावस्था
मं					मित्रवस्था
गु				विपरीत परिस्थिती	कुमारावस्था
श					कुमारावस्था

खास प्रकार का ग्रहों के बीच रहा संयोग

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

नीचभंगराज योग

लक्षण:
बुध क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है
दुर्बल भाव का अधिपति चन्द्र केन्द्र में है ।

आप अतिभाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

सुनभयोग

लक्षण:
सूर्य को छोडकर कोई भी गृह चन्द्र से दूसरे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न की दूसरी राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि की स्थिति से सुनभा योग बनता है। यह ग्रह अकेले हो या अन्य ग्रहों के साथ हो। सुनभा योग में जन्म लेने से यह साफ़ बताया जा सकता है कि आप बड़ी बुद्धिशाली एवं प्रसिद्ध महिला बनेंगी। आप विदुषी महिला हैं। आपके पास धन की कमी नहीं होगी। संगीत तथा अन्य कलाओं में अभिरुचि जागृत होगी। लोगों के बीच मान्यता प्राप्त होगी। जीवन में स्वप्रयत्न के माध्यम से प्रगति प्राप्त करने का प्रयास चालू रहेगा। अन्य लोगों के बातचीत करने के ढंग को देखकर उनके मनोभाव को जानने में प्रवीण हैं।

अनभयोग

लक्षण:
सूर्य के अतिरिक्त कोई भी गृह चन्द्र से बारहवे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न से बारहवीं राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि अकेले या एक साथ स्थित रहने पर अनभा योग बनता है। अनभा योग लड़की और उसके पति को श्रीमंत और सुखी बनाता है। भौतिक संपत्तियों से तथा लौकिक प्रतिष्ठाओं के साथ आपका चरित्र सुशोभित रहेगा। आपको अच्छे कपड़े, आभूषण और नये परिधान अच्छे लगते हैं। अपनी दानशीलता तथा दयाशीलता से आप एक कुशल गृहिणी कहलायेंगी। धनी होते हुए भी आप व्यवहार में अहंकार और चंचल स्वभाव से मुक्त रहेंगी। स्वभाव में विनयभाव प्रकट हो उठेगा। योग्य शारीरिक सौन्दर्य, शाँत गंभीर मुखमुद्रा इन योगवालों के लक्षण हैं। आपका करुणापूर्ण व्यवहार और विनय आप को कीर्ति प्रदान करेगा।

दूरदूरयोग

लक्षणः
अनभ और सुनभ दोनो योग प्राप्य हैं।

जन्म पत्रिका में जब सुनभा और अनभा योगों की जोड़ी बनती हैं तब उसे दुरुधरा योग कहा जाता हैं। यह योग आपकी कुंडली में बना है। इसके अनुसार आप धनी महिला बनी रहेगी। इसका फल लड़कपन में पिता को और शादी के बाद पति को प्राप्त होगा। धन का अभाव आपको कभी न होगा। इतनी सुविधा होते हुए भी आप अहंकार
और अक्कड़पन से मुक्त रहेंगे। विनयपूर्ण एवं प्रेमपूर्ण स्वभाव से श्रेष्ठ गृहिणी का पद सुशोभित होगा। आपको सभी सुखसुविधाएँ प्राप्त होगी। आप संपन्नता की प्रतिमूर्ति हैं। आप को वाहन योग प्राप्त हैं।

गज़केसरी योग

लक्षणः
चन्द्र से लेकर गुरु ने केन्द्रस्थान प्राप्त किया है।

गजकेसरी योग गुरु और चन्द्र के परस्पर केन्द्रस्थ होने से बनता है। आप का जन्म इस योग में होने से ज्योतिशास्त्र के आधार पर ऐसा माना जाता हैं कि आपका जन्म जिस परिवार में हुआ वह सौभाग्य से भरा रहेगा। आप जहां कहीं भी रहेंगी वहाँ धन, संपत्ति तथा विजय ज़रूर प्राप्त होगी। यही नहीं केसरीयोग की ऐसी विशेषता होती हैं कि इस योग में पैदा होने वाली लड़की अपने पति के केमद्रुम आदि योगों का दोष दूर कर देती है। सामान्य रूप में आप दीर्घायु रहेगी और आपका जीवन सफल रहेगा। दूसरी औरतों की अपेक्षा आप विपरीत परिस्थिति में भी बुद्धि और चिंतन के माध्यम से समस्याओं का निराकरण कर पायेंगी।

वसुमतियोग

लक्षणः
गुरु, शुक्र और बुध लग्नस्थल या चन्द्रस्थान से उपचयन स्थिती में रहे हैं।

वसुमती योग में जन्म होने के कारण बहुत बड़ी संपत्ति की मालकिन बनेंगी। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण और सुखमय होगा। आप ऐश्वर्य से परिपूर्ण रहेंगी।

अमलयोग

लक्षणः
लग्नस्थल या चन्द्रसथान से दशवें स्थान पर लाभदाई श्रेष्ठ गृहों का रहना।

आपका जन्म अमला योग में होने से आप और आप के पति संपत्ति और कीर्ति उपार्जन कर पायेंगे। आप के विरुद्ध मनोभाव और कल्याणकारी कार्यों को जन समूह आसानी से समझ पायेंगे। आप बड़ी अमीर बन जाएँगी। हृदय की निर्मलता से आप को समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त होगा। इस कारण मान्यता भी प्राप्त होगी। आपका सारा जीवन सुखपूर्ण और ऐश्वर्यमय रहेगा।

सशीमंगलयोग

लक्षणः
चन्द्र और मंगल एक ही स्थान पर रहे हैं।

आपकी जन्मपत्रिका में कुज (मंगल) और चन्द्र एक ही राशि में होने से आपको इस योग की प्राप्ति हुई है। शशिमंगल योग के अनुग्रह से आप का जीवन आनन्दमय रहेगा। जन्म की तिथि से यानी बालावस्था से धन की कमी का अनुभव आपको नहीं होगा। आपकी आवश्यकतायें जल्दी ही पिता या पति से पूरी की जायेगी। आपकी जन्मपत्रिका के आधार पर, आपकी आवश्यकता के अनुसार आपके माँ-बाप या पति के हाथ में रुपये का प्रवाह ही हो जाता है। कहीं न कहीं से आपकी आवश्यकता फलीभूत होती रहेगी। धन की देवी कभी भी आपको छोड़कर नहीं जायेगी।

द्विगृह योग

लक्षणः
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
चन्द्र,मंगल , नवमा भाव में है ।

बड़ो की राय को अनादर करने का प्रवृत्ति होगा । रक्त सम्बधित बीमारियों के लिए सही समय पर वैध्य चिकित्सा लेना चाहिए । सम्पत्ति और धैर्य सही समय पर आपका साथ देगा । दूसरों की ध्यान देने और समझने की प्रकृति से आपको साथ काम करने वाले और रिशतेदारो का अभिनन्दन और प्यार प्राप्त होगा ।

द्विगृह योग

लक्षणः
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
रवि,शुक्र , अग्यारवाँ भाव में है ।

प्रायोगिक परिस्थितियों में आप बुद्वि पूर्वक होकर काम करना जानते है नौतिकत्व मूल्यों और व्यवहारों पर ध्यान देना चाहिए । दूसरों की सहायता किए बिना अपने बुद्वि और शक्ति से धन कमाना चाहिए ।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता है ।

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। विषय सुखभोग में अति अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। सरकारी उच्च अधिकारियों से या अन्य अफसरों से समस्या उत्पन्न होने की संभावना रखते हैं। इस कारण सतर्कता से आगे बढ़ना लाभदायी होगा। हठीली गंभीर मुख मुद्रा और वाचाल स्वभाव दूसरों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनेगा। नृत्य और संगीत के माध्यम से प्रसन्न चित्त रहना पसंद करते हैं। जिस व्यवसाय में कष्ट, लेखन और विद्या का ज़्यादा उपयोग किया जाता है, उस व्यवसाय के साथ आपका गहरा संबन्ध बना रहेगा। इच्छानुसार स्वादिष्ट भोजन सुलभता से प्राप्त होगा। जलाशय से खतरा दिखाई देता है। इस कारण नदी, सागर, तालाब और सरोवर इत्यादि में स्नान करते वक्त सावधान रहें। स्वभाव से विनयशील होने के कारण प्रशंसा के पात्र बनेंगे। हठीले स्वभाव के कारण एकाध बार हानि या अपमान सहन करना होगा। केवल मैं ही सही हूँ, यह धारणा सदैव सही होना संभव नहीं। चर्म विकार से बचकर रहें।

सिंहराशि तीसरे स्थान पर रहने के कारण सुख बांटने वाले व्यक्ति हैं। बदचलन व्यक्तियों से सजग रहना आवश्यक है। समय के साथ साथ धन का अभिमान आपके दिमाग में जन्म लेगा। व्यवहार और विचार दोनों के माध्यम से हिंसात्मक क्रिया करने में ज़रा भी पीछे नहीं हटेंगे। ३६वें से ४२वें वर्ष के बीच जीवन में स्थायित्व आरंभ होगा।

धनु राशि सातवें स्थान पर है। इस कारण सहमित्रों से या भागीदार से मानसिक क्लेश होने की संभावना है। अन्य की क्षतिओं को देखनेवाले और परामर्श करने की आदत वाले मित्र होंगे। उनके साथ मानसिक क्लेश होने की संभावना है। कलह प्रिय मित्रों से बचना आपके लिए आवश्यक है। जीवनसाथी और संतान का सुख उत्तम प्राप्त होगा।

आठवें स्थान में मकर राशि के होने से विद्या प्राप्ति के कार्य में सफलता प्राप्त होगी। गौरव पाने जैसे अनेक सद्‌गुणों के आप मालिक हैं। आप क्रियात्मक स्वभाव के हैं। सुखी और शक्तिशाली व्यक्ति हैं। शास्त्रीय ज्ञान की पूर्ण जानकारी और अनेक विषयों का ज्ञान आपको उपलब्ध होगा। उच्च श्रेणी के अफसरों से प्रीति प्राप्त होगी। विदेशी कारोबार से संबन्ध रहना संभव होगा। महँगे और सुन्दर वस्त्र परिधान के आप बड़े शौकीन हैं। स्त्री और ज़मीन के कारण खुलेआम खर्च करने के आदि हैं। साथ ही साथ अपने सुख का प्रदर्शन करना भी अच्छा लगता है। इस कारण से भी खुले हाथों से धन खर्च करने की आदत आप में पाई जायेगी।

आप चातुर्यपूर्ण कार्यों से और बुद्धिबल से धन कमाने वाले हैं। सट्‌टा बाज़ार आपके लिए योग्य नहीं हैं। जीवन के ४५ और ४६ वर्ष में आर्थिक नुकसान होगा। जीवन के २४,२९,३३,३५,४१,४७, ५९,६० और ६२ महत्वपूर्ण वर्ष रहेंगे।

लग्नाधिपति दसवें स्थान पर हैं। इस कारण पिता के माध्यम से भाग्योदय का लक्षण है। स्वपुरुषार्थ और परिश्रम के माध्यम से राजकीय सम्मान योग उपलब्ध है। जीवन को आदर्शवादी बनाने में माता की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मित्र, बन्धु व राजपक्ष से सहयोग प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करना होगा।

केतु प्रथम स्थान पर रहने से आपका चेहरा सौन्दर्यवान और प्रसन्न रहेगा। आपके स्वभाव से हर कोई आकर्षित रहेगा।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भावाधिपति के नव में स्थान पर रहने से संपत्ति, बुद्धिमता, कार्यकुशलता, धैर्यशीलता इत्यादि गुणों से संपन्न होंगे। बालावस्था में स्वास्थ्य संबन्धी कोई समस्या का सामना करना होगा। समय के बीतने पर स्वास्थ्य में सुधार होगा। धार्मिक और पुण्य स्थलों पर जाने की संभावना है। सब प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होंगे। वाहन की सवारी सदा सावधानी पूर्वक करें। जीवन में एकाध बार दुर्घटना का सामना करना अनिवार्य सा जान पड़ता है।

क्योंकि मंगल गृह और दूसरी देव एक ही स्थान पर उपस्थित है आप वकालत और न्याय से सम्बधित क्षेत्रों में सफल हो सकते है ।

ऐसा देखा जाता है कि गुरु दूसरे देव से संयोग में है । आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तके पठना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते है ।

क्योंकि दूसरा देव सातवी भाव से प्रभावित है आप संन्तानो से धन और सम्पति पा सकते है ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्वि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने के कारण व्यापार क्षेत्र में क्रय-विक्रय के कार्य में अति निपुणता प्राप्त होगी। अन्य लोगों के लिए साहसपूर्ण कार्यों में जुटने के विरुद्ध हैं। आपकी आत्मीयता के प्रति अन्य लोगों के मन में शंका-कुशंका जाग्रत होगी। आप के बारे में झूठी धारणा उत्पन्न होगी। स्वपुरुषार्थ से ही संपत्ति व सुख अर्जित करने में सफल होंगे।

गुरु तीसरे स्थान पर रहा है। इस कारण आप सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करनेवाले व्यक्ति बनेंगे। हर कार्य और संभावित घटना को अनेकान्त दृष्टि से समझने की क्षमता आप में रही है। अन्य लोग आप से आकर्षित होंगे। आर्थिक दृष्टि से निर्बल होते हुए भी हर व्यवहारिक कार्य बड़ी सुन्दरता से निपटाने के आदी हैं।

तीसरे भाव के उपस्थित शुभ गृह आपके भाई - बहन को दीर्घयु प्रधान करता है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी दसवें स्थान पर रहने से श्रेष्ठ लोगों से और श्रेष्ठ स्थानों से अनेक प्रकार का समर्थन प्राप्त होगी । आप रासायनिक शास्त्र में अभिरुचि रखनेवाली महिला हैं। आप पंचेन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रख सकेगी। यह स्वर्ण के साथ सुगंध के मिश्रण जैसी बात होगी। आप आत्मसंयमी महिला हैं। इस कारण सदा आत्म संतोष की अनुभोक्ता हैं। स्त्री में जब आत्मसंयम और आत्मसंतोष एक साथ प्रकट हों तो दिव्यता उसके साथ रहती है। स्वपुरुषार्थ से अर्थात परिश्रम से आध्यात्मिक सत्य की उपलब्धि हो सकती है।

चौथे स्थान का स्वामी बुध है। आप समाज मध्य तत्वचिंतक मानी जायेंगी। आप बुद्धिमान और आदर्शवान महिला के रूप में पहचानी जायेगी। आप को समाज के लोगों से सम्मान प्राप्त होगी । योग्य प्रोत्साहन प्राप्त होने पर महिला जगत की श्रेष्ठ नारी बन सकती है। आप में अनन्य कार्यशक्ति छिपी है। सफलता आप का साथ देगी। अध्ययन-मनन का अभ्यास जारी रखने पर विदुषी के रूप में विख्यात होना संभव है।

बच्चे, मन, बुद्वि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्वि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने से विद्या विषयक कार्यों से प्राप्त हुआ ज्ञान और स्वानुभव आप पुस्तिका के रूप में अन्य को समर्पित करके श्रेष्ठ कार्य करने की संभावना रखते हैं। धन और निपुणता आप की भविष्य की पीढ़ी को निश्चित प्राप्त होगी। 'ग्रंथकर्ता महादक्षो बहुपुत्र धनान्वितः।।'

लग्न से लेकर पाँचवी भाव में शुभ गृहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ गृह जो इस भाव से प्रभावित है, बच्चों के जन्म के लिए उचित माना जाता है । ऐसे उचित सूचनाएँ को इस जन्मकुण्डली में दिखाया गय है

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

छठ्ठा भावाधिपति के नवमें स्थान पर होने से कार्यक्षेत्र में प्रगति और गिरावट दोनों का अनुभव होता रहेगा। बिल्डिंग मेटिरियल, भवन निर्माण और पैतृक व्यवसाय के माध्यम से लाभ प्राप्त करना सरल होगा। जीवन साथी के भाई-बहन के स्वास्थ्य की चिन्ता होना संभव होगी। अथवा उनसे मन मुटाव हो सकता है।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुण दोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। आप पति-भक्त और पतिव्रता स्त्री हैं। निष्कलंक पति प्रेम की पात्र बनेंगी और साथ ही पूरे परिवार को आपसे आनंद और शान्ति का अनुभव होगा। आप का असाधारण प्रेम, सत्यशीलता और समर्पणभाव पूरे परिवार के मन को जीत लेगा। आप के आगमन से पतिगृह में प्रगति होगी। आप के भाई आप से दूरदेश या विदेश में निवास करेंगे। नवीन प्रकार के वस्त्र परिधान, आभूषण अलंकार और कलात्मक कार्यों में अभिरुचि रखनेवाली स्त्री हैं। पत्र व्यवहार में अति निपुण हैं। इसके अलावा हर कार्य अति चतुरता से निपटाने की कला में निपुण हैं। थोड़े से परिश्रम से साहित्य क्षेत्र में ज़्यादा सफलता प्राप्त करने की संभावना है।

पूर्व दिशा से जीवनसाथी प्राप्त होने की संभावना दिखाई देती है।

राहु आपकी सातवीं राशि में स्थित है। भविष्य में दुखी होने की परिस्थिति की संभावना है। आप को अपने कुल को लगते कलंक से बचाना होगी। पर आपको स्त्री सहज ध्यान, भाव और आत्मनियन्त्रण होने से स्वयं रक्षा प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होगी। आप विवाह से संबन्धित समाज के सभी नियमों का पालन करने को तैयार नहीं होगी। उस स्वतन्त्रता पर आपकी शिकायत की जायेगी। विवाह में देरी हो सकती है। आपको भोजन के क्रम में ज़रा ध्यान देना आवश्यक होगा।

सूर्य गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपके पति आत्मीयभाव के और परिपूर्ण मानसिक परिपक्वतावाले श्रेष्ठ पुरुष होंगे। आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन प्राप्त होता रहेगा और इस कारण आपको भाग्यशाली माना जा सकता है।

चन्द्र गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद होगी। यह निश्चित है।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पति और आपके बीच बार-बार मनःदुख होने की संभावना है। छोटे झगड़े
महास्वरूप न ले पायें इसकी आपको सावधानी रखनी होगी। परंपरा का त्याग शीघ्रता में न करना ही लाभप्रद होगा।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि रही हैं इस कारण अनेक दोषमय फल से मुक्त रह पाएगी। अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आनंद का अनुभव होगा।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से आप की आयु औसत आयु से अधिक रहेगी। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ की संभावना है। जीवनसाथी के प्रति शंका-कुशंका जाग्रत होगी। आकस्मिक रूप से धनी बनने का स्वप्न पूरा नहीं होगा। दांपत्य की मधुरता के लिए अधिक प्रयत्न करना होगा।

शनि आठवें स्थान पर रहा है। आर्थिक स्थिति निर्बल होने पर भी विवाह के बारे में उत्सुकता पैदा होगी। मौलिक विचार के व्यक्ति हैं। अपनी विचार धारा सिद्ध करने में निपुण हैं। जीवन में निर्बलता और दुःख उत्पन्न होने की संभावना रखते हैं।

क्योंकि आठवों देव आठवी भाव में ही उपस्थित है दीर्घयु से सम्बधित निषेधार्थक विषय नहीं है ।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति आठवें स्थान पर है। दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का तथा कष्ट और परेशानी की संभावना है। एक स्त्री होने के नाते सहनशीलता से हर मुश्किल का सामना करना आपके लिए उचित कार्य बनेगा। इच्छानुसार पिता के समीप निवास या सहारे से वंचित रहना पड़ेगा। परिश्रम से अधिक फल का अनुभव होती रहेगी ।

नौवे भाव में चन्द्र स्थित है। इसलिए आपको भाग्य एवं ऐश्वर्य प्राप्त होगा। सन्तानों, मित्रों एवं संबन्धियों की कमी नहीं होगी। आप हृदय से दयालु हैं और हमेशा आदर्शवान रहे हैं। आदर्श और उदारतापूर्ण व्यवहार से सुख और शंति का अनुभव होगा। तीर्थ यात्रा व पुण्य कार्यों में रुचि होगी।

नौवे भाव में मंगल की उपस्थिति होने से आप स्वतन्त्र विचार के हैं और साथ ही साथ अधिकार के रक्षक भी हैं। यह होते हुए भी आप अपने माँ-बाप के प्रति अविनयपूर्ण व्यवहार करने वाले हैं। फिर भी जनसमुदाय के बीच दानशील और उदारमय व्यवहार से जाने जायेंगे। 'हिंसा विधाने मनसः प्रवृत्ति.....' हिंसा व क्रूरता से परहेज न होगा।

नवमें भाव पर स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति अनेक सुख संपत्ति की प्राप्ती दिलानेवाला है। अनेक अनिष्ठ कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को तीसरे भाव में स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा श्लोकों केअनुसार आपको अपने भाईयो के द्वारा संतोष प्राप्त होगी । आप धैर्य शाली और विश्वास रखने वाली है । आप वाग्मी और विश्वस्त है ।

दसवी भाव मीन राशी है । यह एक जलरुपी चिनह् है जो गुरु के नियंत्रण में है । यह मत्स्थ क्षेत्र, द्रावक, विदेशी व्यापार, तेल, समुद्र,

वकालत, धार्मिक कार्यक्रमों, वकील, नौविधा, पोत परिवहन प्राध्यापक और बैंक के मालिक को सूचित करता है यह भी सूचित करता है कि आप समुद्रीय उत्पन्न, समुद्रीय जीव विज्ञान, पछली पकडने का काम और जल शुदीकरण में सफलता पा सकती है ।

बुध गृह दसवी भाव है और सूचित करता है कि आप उधोग में अपने आन्तरिक शक्ति और बुद्विवैभव को महत्व देगी। उधोग क्षेत्र में उत्पन्न मुसीबतों को अपनी आयोजना के जरिए धैर्यपूर्व सामना करेगी । बुध गृह मन की रसिकता और भावना को नियंत्रित करता है । कला विज्ञापन,पत्रिका प्रकाश आदि उधोग क्षेत्र आपके लिए उचित है ।
क्योंकि बुध गृह दसवी भाव में है आप होशियार होगी और एक श्रेष्ठ उधोग को अपनाएगी । आप अपने धैर्य को प्रकट करेगी । आपको अनेक पुरस्कार, प्रशंसा पत्र, और अंलकार (गहने, वस्त्र आदि) प्राप्त होगी । आप व्यापार - व्यवसाय, दलाल प्रतिनिधि, वाजिज्य व्यवसाय संस्थापन आदि में काम कर सकती है । बुध गृह साहित्य और शास्त्र की ओर झुकाव प्रकट करती हे । यह आपको शास्त्र, हिसाव - किताब गणितशास्त्र और कानून में रुचि प्रधान करेगी ।

मीनराशी में उपस्थित बुध गृह आपको किसी भी कार्य पर बहुत समय तक बैढने की क्षमता देती है । आप एक सफल मुनीम, अर्थिक व्यवस्था कर्यमचारी, लेखा परीक्षक, और कर समाहती बनेगी । सरकारी सम्बधिक उधोग होगी कर, प्रथा और अन्वेषण ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

वैज्ञानिक, तन्त्रविधा (गूढता), वायु मार्ग से यात्रा, ज्योतिष, अस्पताल में सहायक, जन गणना, शेयर- बाजार, जेल विभाग, हस्तलेखों का भाषान्तर करना, रसायनशाला, चमशोधनालय, ठगना चलमुद्रा ।

आपके जन्मकुण्डली में सूर्य उच्च स्थान पर खड़ा है । सफलता आपके लिए निश्चित है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गें को सूचित करता है ।

ग्यारहवाँ भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से श्रेष्ठ स्थान और सम्मान दोनों का योग है। अपनी सत्यवादिता और निष्पक्षता के कारण लोक समर्थन प्राप्त करेंगे। आप भाग्यवान व्यक्ति हैं। हर कार्य में निपुणता प्राप्त होगी। आप एक विश्वसनीय और वफादार व्यक्ति हैं।

सूर्य ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आपके मित्र आपके स्वाधीन शक्ति को उपयोग में लेंगे। आप संतोष और सामर्थ्य के समानता से मालिक बन पायेंगे। आपके पिताजी को अनेक क्लेशों का सामना करना पड़ेगा। आप दीर्घ आयु के हैं।

शुक्र ग्यारहवें स्थान पर रहा है। श्रेष्ठ मित्र जीवन में उपलब्ध होंगे। आनन्दित करनेवाली संतान का योग है।

ग्यारहवी देव बिकोण स्थान पर है ।आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने से जीवन के प्रारंभकाल में अनेक कष्टों का सामना करना होगा। अनिष्ट घटनायें घटने की संभावना है। अपनी मालिकी की कोई वस्तु कठिनता से प्राप्त होगी। फिर भी अन्य लोगों से लाभ और संरक्षण प्राप्त होगा। अन्य बच्चों से अपनी संतानों के तुल्य स्नेह और सहयोग करने के आदी होंगे।

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। कुंडली में ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा -फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों को जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में आप उत्साही महिला बनेंगी। श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति की संभावनायें हैं। अन्य की अपेक्षा आप को ज़्यादा सफलता मिलती दिखाई देगी। आप जो कुँवारी हों तो विवाह का योग निकट है। इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। संतान प्राप्ति का योग भी निकट है। जीवन साथी से सुखद व्यवहार होने की संभावनायें हैं। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। घर के बड़ों या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूलभाव मिलती रहेगी। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहनी पड़ेगी। स्वजनों से वियोग व्यथा सहना होगी । ई.एन.टी डाक्टर का उपदेश लेकर उन अव्यवों का उपचार करना अच्छी होगी । कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। परिश्रमशील महिला का स्वभाव होने पर श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होगी। गुरु दशा का आरंभकाल दोष युक्त होते हुए भी उसका अन्तिम समय सुखद और लाभदायक होगा है।

गुरु बलवंत रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि,, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

∇ (20-05-2015 >> 18-01-2018)

बृहस्पति दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में आपको प्रतिकूल स्थिति का सामना करना होगा। आपके स्नेही मित्र या दोस्त दुश्मन में परिवर्तित होंगे। सभी दिशाओं से असुविधा होगी। आपको लज्जित बनानेवाली बातें हो सकती है। आर्थिक उन्नति ज़रूर होगी। आपको विश्लेषण तथा ध्याननिरत होने का मनोबल बढ़ेगा। नए गृह उपकरण प्राप्त होंगे। इस समय अन्य स्त्रियों से रुकावट पैदा हो सकती है। जीवन साथी या जीवन संगिनी को शारिरिक विकार का सामना करना पड़ जा सकता है।

∇ (18-01-2018 >> 06-11-2018)

बृहस्पति दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगी। आपको मेहमान के रूप में कई पार्टियों में तथा मनोरंजन कार्यों में भाग लेना पड़ेगा। आतिथ्य सन्मान प्राप्त होगा। आप अपनी प्रतिष्टा एवं मान्यता में वृद्धि का एहसास करेंगे। लंबी यात्राओं से होनेवाले कष्ट दूर होंगे। सामान्य स्वाधीनता बढ़ेगी। समूह के बीच सन्मान और मान्यता प्राप्त होगी।

∇ (06-11-2018 >> 07-03-2020)

बृहस्पति दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में आप को लौकिक सुख की अनुभूति होगी। शत्रुओं के मनोभाव में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देगा। उनसे प्रेमपूर्ण सहकार प्राप्त होगा। बहुत लोग आपकी सहायता के लिए निकट आयेंगे। आपको अपनी योग्यता दिखानेवाले प्रमाण पत्र भी प्राप्त होंगे। विवाह संबन्धी कार्यों अथवा संतान विषयक कामों में मन चाही सफलता की आशा कर सकते हैं।

∇ (07-03-2020 >> 11-02-2021)

बृहस्पति दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आपको आश्चर्य जनक शक्ति एवं योग्यता प्राप्त होगी। मनोबल में भी वृद्धि होगी। शत्रुओं को जीतने का सामर्थ्य प्राप्त होगा। आप प्रसिद्धि और स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। आप सुख और शाँति से दिन व्यतीत कर पायेंगे। पूर्व में किसी डाक्टर ने सर्जरी करवाने की सलाह दी होतो, इस समय में यह काम हो सकता है।

∇ (11-02-2021 >> 07-07-2023)

बृहस्पति दशा में राहु की अन्तर्दशा में अनेक विरोधी व्यक्ति क्रियाशील बनेंगे। सत्कार्य के बदले शत्रुभाव उत्पन्न होगा। मानसिक उद्वेग उत्पन्न करनेवाली अनेक घटनायें घटित होगी। वर्तमान का निवास स्थल बदलने की इच्छा प्रकट होगी। अपने संबन्धियों का स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। इस कारण अनेक तरह की कठिनाईयों का सामना करना होगा।

शनि दशा

शनि दुःख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में बुद्धि कुंठित होती है, अनेक प्रकार के मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और सुख दुःख दोनों का अनुभव होता रहता है। सरकार या उच्चधिकारियों से धन मिल सकती है। अनेक सेवक और सहायक आपके चारों ओर रहेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार और सन्तानों का सुख न होने की संभावना है। भिन्नप्रश्नों से मन चंचल रहेगी। पैरों पर कोई पीड़ा होने की संभावना है। हर व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार कर्म फल भोगती है। इस काल में सुख-दुख मिश्रित अनुभव होते हैं। श्रेष्ठ गृहनायिका का पद संभालने का समय है। जीवन के मध्यम काल के बाद जब शनि दशा होती हैं तो अपनी आयु से कम आयु के विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ निकट का संबंध स्थापित होने की संभावनायें रहती है। इस संबन्ध से अयोग्य व्यवहार में बढावा होने की संभावना होने से जागृत रहना लाभदायक होगी । अपनों से नीचे के लोगों के माध्यम से धन लाभ होगी।

शनि वर्गबल के कारण सशक्त स्थिति में रहा है। इस कारण अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शनि अच्छे स्थान में रहने से इस दशा में आपको अपने परिश्रम से पदोन्नति मिलेगी। कृषि और अन्य उत्पादनों से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। स्वयं ही कुछ संपत्ति कमाने का भाग्य प्राप्त होगा। भिन्न वर्गीय व्यक्तियों से मान व धन प्राप्त होना संभव होगा।

∇ (07-07-2023 >> 10-07-2026)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप अपने घर में और समूह के बीच अनेक क्लेशों का अनुभव करेंगे। मानसिक और चिंतन शक्ति क्षीण होगी। इस कारण आपके दोस्त सोचेंगे कि आप में मानसिक परिवर्तन आ गया है। निवास स्थान से दूर की यात्रा संभव है। निम्न वृत्ति के लोग आप से काम कराकर लाभ उठाने की कोशिश करेंगे।

∇ (10-07-2026 >> 19-03-2029)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप का भाग्य चमक उठेगा। आप अपनी आशाओं और लक्ष्यों की पूर्ति करेंगे। आप को जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और मान्यता भी प्राप्त होगी। आप का कर्तव्यबोध प्रशंसनीय होगा। आपको अविचारित मार्ग से कोई सहायता और मार्गदर्शन मिलेगा जिससे आप आगे बढ़ सकेंगे। आपके कार्यक्षेत्र से बदली होने की संभावना है। बौद्धिक विकास के लिए अनुकूल समय है। शुभ कामों के संपन्न होने की पूरी संभावना है।

∇ (19-03-2029 >> 28-04-2030)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दुःख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आप के व्यक्तिगत स्वातंत्रय पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

∇ (28-04-2030 >> 28-06-2033)

शनि की दशा में शुक्र के अपहार में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबन्ध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहादि मांगलिक कार्य होंगे।

∇ (28-06-2033 >> 10-06-2034)

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबन्धी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबन्ध में बुरा प्रभाव ड़ालेगा। आप अपनी नौकरी में उदास हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

∇ (10-06-2034 >> 09-01-2036)

शनि की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में स्थिति दुःखद होगी। जीवन में मृत्यु तुल्य दुःखद घटनायें घटित हो सकती हैं। अपने मन को श्रेष्ठ विचारों से शान्त रखना आवश्यक है। प्रारंभ में ही प्रश्नों को ठीक तरह हल न करने पर जन्मस्थान छोड़कर जाना पड़ेगा। विरक्त और घृणाशील स्थिति में वृद्धि होने की संभावना है। किसी के वियोग की संभावना है।

∇ (09-01-2036 >> 17-02-2037)

शनि की दशा में मंगल के अपहार में आपको दूरयात्रा करके विदेश जाने का योग है। बीमार पड़ना भी संभव है। सब कुछ नष्ट होने का भ्रम उत्पन्न होगा। पर इस काल के अन्त में प्रगति होगी। रोग या चोट के कारण सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

∇ (17-02-2037 >> 25-12-2039)

शनि की दशा में राहू की अन्तर्दशा में एक गहरे कुए में गिरने की संभावना है। आपको हर कदम पर सतर्क रहना होगा। आपके शत्रुओं को आक्रमण करने का अच्छा मौका है। आत्मीय और भक्तिपूर्ण कार्य आपकी भलाई के लिए योग्य रहेगा।

प्रारंभ से **07-07-2042**

बुध दशा

इस दशा में आने से बड़े लोगों की सहायता आपको मिलेगी। वे लोग आपसे श्रेष्ठ बर्ताव करेंगे। ज़मीन, जानवर, चिडियां और अच्छे साथियों से आनन्द प्राप्त होगी। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगी। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण होते रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा शायद कभी हो जायेगी। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय युक्त रहेगी। साधु-संत् पुरुषों के सेवा कार्य में अति आनंद प्रदान होगी। एक गृह नायिका के स्थान को शोभा दिलानेवाले अनेक कार्य में सफलता प्राप्त
होगी। नये मकान के निर्माण की संभावना है। भूमि के संबन्धी कार्यों में जुटने से लाभ होगी।

प्रारंभ से **07-07-2059**

केतु दशा

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण अति आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने को किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। महिलाओं में धीरजशीलता ज़्यादा होती है। इसलिए घबराइये नहीं। वाद विवाद और बदनामी का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता हैं तो धन, पारिवारिक सुख देनेवाला होता है। बालावस्था में इस दशा काल में पढ़ाई में विक्षेप का सामना करना पड़ती है। दूर देशागमन की
अनेक संभावनायें हैं। मित्रजन से अनेक समस्या पैदा होगी। सुख और शांति क्षीण होगी। धन नाश का समय है। भक्तिपूर्ण जीवन आश्वासन दिलाती है। अन्य महिलाओं के कारण अन्य लोगों से संबन्ध बिगडेंगे। मानहानि सर्वसाधारण बात बनेगी। कुछ काल बाद आनंदमय वातावरण की प्रतीक्षा कर सकती हैं।

ऊपर बताई गई बातें केतु दशा के प्रभाव का सूचना मात्र है। इससे डरना व्यर्थ होगी । पुरुषार्थ पूर्ण प्रयत्न से मन को बस में रखकर ईश्वर के प्रति निष्ठा रखना बुद्धिपूर्ण कार्य होगी । पुरुषार्थ से आत्मबल में वृद्धि होती है। यह जीवन की सफलता का एक मात्र मार्ग कहा जाता है।

प्रारंभ से **07-07-2066**

शुक्र दशा (अथवा भृगु दशा)

पहले किए हुए अच्छे कर्मों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगी। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में की जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल पायेंगी। भिन्न प्रकार की सवारियों में कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगी। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या आपको बाधा देगी। संबन्धियों से मानसिक अथवा शारीरिक तौर से अलग रहनी पड़ेगी। कभी कभी मन की अशान्ति का अनुभव होगी। विवाह की बात चलती हो तो अल्पकाल में विवाह सुनिश्चित होगी। यह दशा पति के लिए सुखमय होगी। सुखद दांपत्यजीवन और संतान प्राप्ति के लिए यह श्रेष्ठ समय है।

जन्म कुण्डली में शुक्र के संग शत्रु ग्रहों का सहवास होने से संपूर्ण शुभ फलों से वंचित रहना पड़ेगा। परंपरा से भिन्न प्रकार की मित्रता हो सकती है। सतर्क रहें लाभदायी होगा।

मानसिक संतुलन खो बैठेंगे। गुप्त रोगों का शिकार बनना पड़ जा सकता है। शारीरिक सौन्दर्य और आकर्षण में क्षीणता उत्पन्न होगी। लैंगिक शक्ति दिन-प्रतिदिन दुर्बल होती हुई दिखाई देगी। अपमान और धन नाश नीच मित्रों के माध्यम से हो सकता है। इस कारण सावधानी से हर कदम उठाना बुद्धिगम्य माना जायेगा। जहाँ से आशा की प्रतीक्षा रखेंगे वहाँ निराशा ही उपलब्ध होगी। जिन से मदद की आशा होगी वे विरुद्ध व्यवहार करेंगे। संक्षेप में सहयोग और सहानुभूति का अभाव दिखाई देगा।

गोचर फल

नाम **: Sample** (स्त्री)
जन्म राशी **: कुंम्भ**
जन्म नक्षत्र **: शताभिषा**

गृहस्थिती : 15-जूलाई- 2016
अयनांश : चित्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान में उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्व पूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिकता रखने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जो फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया गया है।

∇ (15-जून-2016 >> 15-जूलाई-2016)

इस समय सूर्य पंचम भाव का सक्रमण करेगा

नियमों और नियंत्रणों का पालन करने का यथा योग्य समय है। 'चेतता नर सदासुखी' कहावत को ध्यान में रखने से भविष्य में उत्पन्न होनेवाली कठिनाईयों से आप मुक्त रह सकती हैं। फिर भी संपूर्ण रूप से हानि और कष्ट से मुक्त रहना असंभव है। फिर भी आपके दुःख में अभाव लाया जा सकता है। आक्षेपों के और अपमानजन्य बर्ताव के प्रति आप ज़्यादा लक्ष्य न दे वही उत्तम कार्य होगा। कोई भी कार्य हो जो नीतिपूर्ण हो तो उसको आनन्द से स्वीकार कर लें और उत्तम प्रकार से निर्वाह करने का प्रयत्न करें। इस समय आप आराम और विश्राम के प्रति ज़्यादा ध्यान दे तो अच्छा रहेगा। शारीरिक और मानसिक व्यायाम के अभाव में अन्य कठिनाईयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

∇ (15-जूलाई-2016 >> 14-अगस्त-2016)

इस समय सूर्य छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

माँगलिक कार्य आपकी उपस्थिति में संपन्न होंगे। आपके लिए अति महत्वपूर्ण दिन निकट आ रहे हैं। अन्य स्त्री और पुरुष दोनों के दिल को जीतने में आप निपुण हैं। अपनी धारणा के अनुसार कार्यसिद्ध करने में अति पुरुषार्थ करने वाली महिला हैं। सफलता न मिलने तक आप शाँत बैठने वाली नहीं हैं। स्त्री को शोभा दिलानेवाला आत्मविश्वास और शुभ कामनायें आपका साथ देती रहेगी। शत्रुक्षय, सफलता, आर्थिक लाभ और सामाजिक प्रतिष्ठा आदि फलों की प्राप्ति होगी।

∇ (14-अगस्त-2016 >> 13-सितंम्बर-2016)

इस समय सूर्य सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

जब कभी किसी कार्य का आयोजन होता है तो आप बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से उसका अवलोकन करनेवाली स्त्री हैं। हरेक प्रकार से सावधान रहनेवाली युवती हैं। यह होते हुए भी एक बात तो स्पष्ट हैं कि हर नारी के कार्य करने की सीमा रेखा होती है। सामाजिक नियमों के आधीन रहकर ही स्त्रियों के लिए कार्य करना होता है। यह बात स्मृति में रहे तो अच्छा होगा। प्रारब्ध प्रेरित आर्थिक स्थिति शाँत चित्त से निभा लेने में ही अकलमंदी मानी जायेगी। स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहना अनुचित माना जायेगा। स्वास्थ्य के प्रति बनी लापरवाही भविष्य में महँगी पड़ेगी। वर्तमान परिस्थिति और उम्र का ख्याल होना अनिवार्य है। विश्राम और विनोदकार्य के लिए थोड़े कम

समय का उपभोग किया जाये तो अच्छा रहेगा। अन्यथा भविष्य में पछताना होगा। बाढ़ के आने के पहले ही बाँध बनाने में अकलमंदी रही है। यात्रा का संयोग आ सकता है।

गुरु का गोचर फल।

हर राशि में गुरु एक साल तक रहता है। गुरु के कारण अति महत्वपूर्ण अनुभव होते रहते हैं। आपकी चन्द्र राशि में वर्तमान में वह क्या फल देगा, यह नीचे दर्शाया जा रहा है।

∇ (15-जूलाई-2015 >> 11-अगस्त-2016)

इस समय गुरु सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

महिमापूर्ण जीवन के कार्यों में गुरु की शक्ति प्रतिभाशील रहेगी। पुरुष वर्ग के समूह में मान्यता उपलब्ध होगी। आकर्षण और प्रतिभापूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त होगा। इस समय कार्यकुशलता भरी निपुणता प्रकट होगी। समूह के बीच महिला रत्न मानी जायेंगी। आपके सहयोगियों तथा मित्रों का मूल्यांकन किया जायेगा। ज़िम्मेदारी के कार्य का निर्वाह बड़ी सुन्दरता से किया जायेगा और इस कारण आपका समूह में स्वागत किया जायेगा। असाधारण मान्यता तथा सम्मान प्राप्त होगा। विवाह संबन्धी कामों में सफलता प्राप्त होगी।

∇ (12-अगस्त-2016 >> 12-सितंम्बर-2017)

इस समय गुरु आठवाँ भाव का सक्रमण करेगा

अब गुरु प्रतिकूल स्थिति पैदा करनेवाला है। एक के बाद एक कठिनाईयाँ और विघ्नों की श्रृंखला उत्पन्न होनेवाली है। इस कारण मन उद्वेग से भर उठेगा। अनेक कार्यों से मन पीछे हट जाने का प्रयास करेगा। निरुत्साही बनना पड़ेगा। असाधारण प्रकार से क्रोधित होना पड़ेगा। स्त्री को शोभा न देनेवाला क्रोध आप में प्रकट होगा। सशक्त मन की अगाधता में कोई विचित्र प्रकार की धुन का अनुभव होगा। इस प्रकार के अनुभव साधारण स्थिति में कौमार्यकाल के अनुभव से दुःख पैदा करनेवाले होते हैं। स्वास्थ्य में गड़बड़ न हो उसके प्रति जागृत रहना अनिवार्य है। साक्षात्कार, प्रतियोगिता और महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल न होगा।

शनि का गोचर फल।

साधारण स्थिति में शनि का गोचर संचार शुभ नहीं होता। शनि के प्रभाव के कारण निराश होना पड़ता है और मन उद्वेग से भर उठता है। फिर भी अनुकूल ग्रह योग स्थिति में अप्रतिक्षित लाभ भी दिलानेवाला होता है। हर राशि में शनि दो वर्ष और छेः महीने तक स्थान गृहण करता है।

∇ (3-नवेम्बर-2014 >> 26-जानुवरी-2017)

इस समय शनि दशावाँ भाव का सक्रमण करेगा

हर मार्ग से सफलता को प्राप्त करने की कोशिश जारी रहेगी। आप में शौर्य का जागरण होगा जो एक स्त्री के लिए शोभनीय नहीं रहेगा। व्यर्थ के मतभेद को लेकर पति के साथ कलह होगा। परिवार के बीच भी कलह होगा। मानसिक सन्तुलन बनाये रखना असंभव होगा। सोचे समझे बिना हर कार्य में कूद पड़ने की संभावना दिखती हैं। परिवार की बदनामी न हो इस बात का ध्यान रखें तो फिर कुछ या प्राप्त होगा और सम्मानित होंगी। अभ्यास क्षेत्र में प्रगति प्राप्त करना कठिन होगा। साहित्य कार्य में (लेखन इत्यादि) कमी का अनुभव होगा। अब आप कण्टक शनि के बुरे गोचर से गुज़र रही हैं।

∇ (27-जानुवरी-2017 >> 21-जून-2017)

इस समय शनि अग्यारवाँ भाव का सक्रमण करेगा

आप स्वयं भाग्यवान हैं ऐसा भ्रम होगा। परिवार के बीच और बाहरी क्षेत्र में एक समर्थ स्त्री कहलायेंगी। इस कारण सभी लोगों से बहुमानित होगी। धन-संपत्ति में कोई कमी नहीं रहेगी। धारणा के युक्त काम आगे नहीं बढ़ेंगे। उल्टे गति में कमी का अनुभव होगा। कुछ समय के बाद आप गतिशील बनेंगी। बच्चे संतोष का अनुभव करेंगे। जो कार्य अनेक बाधाओं से रुके पड़े थे वे गतिमान होंगे और इस कारण स्वस्थता का अनुभव होगा। श्रेष्ठ और उच्चतर कार्यालयों से अनुमोदनीय बुलावे प्राप्त होंगे। मान्यता भी प्राप्त होगी। पति के साथ उल्हासमय, रस भरपूर जीवन बिताने की स्वर्ण अवसर प्राप्त होगा। लाभ के स्रोतों में वृद्धि की आशा कर सकती हैं।

With best wishes : Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.
First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[LifeSign 14.0.0.2]

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.